Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-1, Issue-4, Continuous Issue-4, November-December2020

भर्तृहरि कृत नीतिशतक की उपादेयता

डॉ.कुसुमलता टेलर
सहायक आचार्य ,
संस्कृत विभाग जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी) विश्वविद्यालय,
उदयपुर 313001

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण होता है क्योंकि साहित्य के द्वारा ही व्यक्ति यह जान सकता है कि उसके क्या करने योग्य और कार्य है और क्या अकरणीय कार्य है इसकी शिक्षा हमें कवि द्वारा रचित साहित्य प्रदान करता है साहित्य के माध्यम से व्यक्ति जो नहीं कह सकता है वह भी साहित्य उसे कह देता है और उसका परिणाम शुभ ही होते हैं !महाकवि भर्तृहरि रचित नीतिशतक ने जो ज्ञान प्रदान किया है वह सदियों पश्चात आज भी उपादेयता लिए हुए हैं

संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषा होने के कारण इसका साहित्य अन्य भाषाओं के साहित्य से अत्यंत विशिष्ट है ! संस्कृत साहित्य को विद्वानों. ने दो भागों में. विभाजित किया है - वैदिक साहित्य एवं लौकिक साहित्य वैदिक साहित्य के अंतर्गतवेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् आते हैं! लौकिक साहित्य श्रव्य एवं दृश्य दो प्रकार का. है! दृश्य काव्य के अंतर्गत नाटक आते हैं. तो श्रव्य काव्य के अंतर्गत गद्य, पद्य एवं चंपू साहित्य आते. है! पद्य साहित्य के अंतर्गत महाकाव्य एवं खंडकाव्य (गीतिकाव्य, मुक्तक काव्य) की गणना की जाती. है! सर्वप्रथम यह जान लें कि मुक्तक काव्य क्या है? किसे कहते हैं ? यथा नाम तथा गुण. के आधार पर जिन पदों को गाया जा सके वह गीतिकाव्य कहलाता है! मानव जीवन के किसी एक ही पक्ष का उद्गम अथवा अंतरात्मा के किसी एक ही पटल का चित्रण गीतिकाव्य. का प्रमुख प्रतिपाद्य होता है ! गीतिकाव्य को "मुक्तक " भी कहा जाता है ! आचार्य विश्वनाथ में अपने साहित्य दर्पण में खंडकाव्य अर्थात मुक्तक काव्य का लक्षण देते. हुए कहा है कि खंडकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशानुसारि च ! ध्वन्यालोक के लेखक आचार्य आनन्द वर्धन ने मुक्तक काव्य के विषय में कहा कि- मुक्तकेषु हि प्रबन्धेषु इव रस बन्धाभिनिवेशिन: कवयो दृश्यन्ते अर्थात प्रबंध काव्य के समान मुक्तक काव्यों में भी रस के प्रति अनुरक्ति दिखाने वाले कवि लोग. देखे जाते है!

संस्कृत .साहित्य ..जगत .में अनेक मुक्तककारों का नाम लिया .जाता है ! उनमें भर्तृहरि नाम के एक राजा हुए जिन्होंने श्रृंगारशतक, वैराग्यशतक एवं नीतिशतक नाम .से तीन .शतकों की रचना की .! भर्तृहरि कृत नीतिशतक ने उस काल में. इतनी . प्रसिद्धि को .प्राप्त .किया कि कालिदास ने अपने अभिज्ञानशाकुंतलम् ,. .विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस, अभिनवगुप्त ने ध्वन्यालोक,. ..केशवमिश्र ने अलंकारशेखर, रुय्यक रचित अलंकारसर्वस्व ,मम्मट रचित काव्यप्रकाश , . .क्षेमेंद्र रचित .औचित्य विचारचर्चा, कविकण्ठाभरण एवं सुवृतिलक,. गोविंद रचित. काव्यप्रदीप, वाग्भट कृत काव्यानुशासन, अप्पयदीक्षित रचित कुवलयानन्द,,. धनंजय कृत दशरूपक, आनंदवर्धनाचार्य .कृत ध्वन्यालोक आदि के साथ- साथ पंचतंत्र एवं हितोपदेश में भी. नीतिशतक के श्लोक प्राप्त होते हैं ! अतः यह कहा जा सकता है कि भर्तृहरि इन सभी से पूर्व रहे होंगे ! कुछ अंत:. साक्ष्यों व किंवदन्तियो के .आधार पर यह कहा जा सकता है कि इनका समय प्रथम शताब्दी रहा होगा ! भर्तृहरि ने अपने जीवन काल में जिन काव्यों की रचना की वे निम्न है-

1वाक्यपदीय

2 वाक्यपदीय टीका

3 श्रृंगारशतक. ,नीतिशतक एवं वैराग्य शतक

4 महाभाष्यदीपिका

5 मीमांसाभाष्य

6 वेदांतसूत्रवृत्ति

7 शब्दधातु समीक्षा!

नीतिशतक .जैसा .कि नाम .से ही .जाना जा . सकता ..है .कि इस ग्रंथ में नीति से संबंधित श्लोक है अतः सर्वप्रथम यह जान लेना आवश्यक है कि नीति 4 का अर्थ क्या. है .? नीति: (स्त्री) शब्द नी+क्तिन् से निर्मित हुआ है .जिसका अर्थ है - निर्देशन दिग्दर्शन औचित्य, आचरण, चाल -. चलन, .व्यवहार, कार्यक्रम, ..नीतिकौशल, .नीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता .व्यवहार कुशलता ,. योजना उपाय, ...कूटनीति ,. .आचरण राजनीतिविज्ञान , ...राजनय, राजनीतिज्ञता, ...राजनीतिक. बुद्धिमता, आचारशास्त्र , ..आचार ,नीतिशास्त्र आचारदर्शन ,अवाप्ति ,अधिग्रहण, देना, प्रदान करना , प्रस्तुत करना, संबंध और सहार है !

शतक शब्द को संस्कृत में शतकम् 5, .।। कहा जाता .है जिसका अर्थ है शताब्दी,. सौ .श्लोका .का समूह! इसलिए नीतिशतकम् .का अर्थ हुआ वह ग्रन्थ जिसमें नीति विषयक सौ श्लोको का संग्रह .जहाँ हमें प्राप्त .होता है वह नीतिशतक कहलाता है!

महाकवि भर्तृहरि ने. अपने जीवन के विविध पक्षों ,. .व्यवहारों और प्रवृत्तियों को .दृष्टिगत रखते .हुए ..उनकी यथार्थता ..को ..नीतिशतक में ..उजागर किया ..है. ! .भर्तृहरि ने अपनी .लोकयात्रा में .प्राप्त ..किये ...अनुभव ..को आत्मसात कर इस अमर कृति की ..रचना .की! यही कारण .है कि ..कवि ने .अपने अलौकिक व्यवहारिक .ज्ञान का सूक्ष्म परिचय देते हुए अपने अनुभवों .को अत्यंत. सहज ,. सरल, स्वाभाविक एवं सुंदर शब्दों में प्रस्तुत किया!

मानव जीवन दुख -. सुख, भाग्य सज्जन -. दुर्जन, मूर्ख, देव, विद्या नीति , दैनिक जीवनचर्या ,लोक व्यवहार में प्रचलित विषयों को लेकर नीतिशतक की रचना की गई !

'कवि क्रांतदृष्टार :. अत: कवि किसी समय विशेष के लिए नहीं लिखते अपितु वे तीनों कालों को. लेकर. लिखते है! यही कारण ..है .कि .भर्तृहरि कृत नीतिशतक की उपादेयता ना केवल भर्तृहरि के काल ..में .थी अपितु सदियों पश्चात ..वर्तमान ...में भी उनके .काव्य की उपेक्षा नहीं .की ...जा .सकती! आज भी नीतिशतक ..हमको दिशानिर्देश .करने के. साथ-. साथ .उस ज्ञान को ग्रहण करने की शिक्षा प्रदान करता है !

कवि भर्तृहरि की दृष्टि में सच्चा मानव वही है जो अपने मन में संतोष की अनुभूति करता हो ?! यही नहीं. इस संसार .रूपी .सागर में सभी .रोगों .की औषधि ..विद्यमान .है, नहीं है .तो भी ,बनाई जा सकती है किंतु मूर्ख व्यक्ति की कोई औषधि नहीं होती !सर्वस्यौषमस्ति .शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्! 6

इस संसार में यह भी कहा .गया है कि जैसी .संगति होती है व्यक्ति वैसा .ही होता .है और यदि मूर्ख को विद्वानों की संगति में रखा ..जाए अथवा मूर्खो को विद्यावान से लाभान्वित किया जाए तो इसके परिणाम ...ओर शुभ हो सकते हैं इस दृष्टि से नीतिशतक ..आज भी हमारे लिए अत्यधिक उपयोगी हैं ..क्योंकि हम मुर्ख को विद्वान बनाने में कुछ कदम उठा .सकते ..हैं !

जैसा की नीति शतकार ने कहा है --

यदा किंंचिज्ञो अ्हं गज इव मदांध: संभवं
तथ सर्वज्ञोअ्स्मीत्यभवदवलिप्तं मम मन :!
यदा किंचितकिंचितबुद्धजनसकाशादवगतं,
तदा मूर्खोंअ्स्मीति ज्वर .इव मदो . में व्यपगत :!!7

प्रत्येक कार्य करने के पीछे कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है उसी प्रकार काव्य रचना के पीछे भी प्रयोजन अवश्य होता है आचार्य विश्वनाथ ने अपने साहित्य दर्पण में काव्य का प्रयोजन बताते हुए कहा हैं चतुर्वर्गफलप्राप्ति :. सुखादल्पधियामपि काव्यादेव यतस्तैन ततस्वरूपम्निरूप्यते!8

ं जैसे काव्य रचना का प्रयोजन धर्म, अर्थ ,काम और मोक्ष होता है उसी प्रकार महाकवि भर्तृहरि ने भी अपने काव्य में ..पुरुषार्थ चतुष्टय का प्रयोग करते हुए सभी धर्मों में श्रेष्ठ जो कि योगियों .के .लिए भी क्लिष्ट है वह हैं सेवाधर्म है कवि ने .अपने नीतिशतक के ..माध्यम से यह बताना चाहा कि हमें सेवा .में ..संलग्न ..रहते हुए कभी भी न्याय मार्ग का .परित्याग नहीं करना चाहिए ! न्यायात् पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा:!9

भर्तृहरि ने नीतिशतक के माध्यम से इस संसार में रहने वाले सभी व्यक्तियों के लिए यह संदेश दिया है कि सदा अच्छे कर्म .करने चाहिए .क्योंकि वे सत्कर्म ..संचित .रहते. हैं ! जीवन में कितनी ..भी ..विघ्न बाधाएं .आए .हमें घबराना नहीं चाहिए अपितु कार्य .को .समाप्त .करके ही ...विश्राम ..लेना चाहिए

प्रारंभयते न खलु विघ्नभयेन नीचै:
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्या :!
विघ्नैर्पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमाना:
प्रारब्भमुत्तमजना: न परित्यजन्ति!! 10

एक स्थान पर कवि भर्तृहरि ने हम सभी को यह बताना चाहा कि संसार में उसी का जन्म लेना सफल है जो विशेष कार्यो से पूरे वंश को उन्नति की ओर ले जाए

परिवर्तिनि संसारे मृत: को वा न जायते
स जातो येन जातेन वंश: संमुन्नतिम्!!11

भर्तृहरि ने धन की उपादेयता बताते हुए कहा कि ..जीवन में अर्जित .किए हुए धन का उपभोग करना चाहिए सामर्थ्य के अनुसार दान .भी देना चाहिए. और यदि कोई व्यक्ति अपने थन .का न तो स्वयं उपभोग करता है और न दान .देता है तो धन स्वयं ही नष्ट हो जाता है अत: हम. दीन हो या लक्ष्मीपति हमें अपने जीवन में दान अवश्य करना चाहिए नहीं तो हमारे धन की तृतीय गति होती है

दानं भोगो नाशतिस्त्रों गतयो भवन्तिवित्तस्य !
यो ना ददाति न ..भूड्क्ते तस्य तृतीय गतिर्भवति!! 12

संसार में सर्वत्र धन. की महिमा से .सभी अवगत हैं कवि भृतहरि ने भी नीतिशतक में धन का महत्व .बताते हुए कहा है कि "सर्वे गुणा: कांचनम् आश्रयन्ति" ! 13

अतः हमें ..उचित तरीके .से धन अर्जित कर उसका उपभोग करना चाहिए और उचित उपयोग भी करना . चाहिए!

साहित्य ..समाज का दर्पण होता है और कवि साहित्य के .माध्यम से हमें जीवन की वास्तविकता से अवगत भी कराते हैं नीतिशतक में एक स्थान पर

हम सभी को कवि भर्तृहरि ने अपने मुक्तक काव्य के माध्यम से एक संदेश यह भी देना चाहा है कि जो बोलता है उसका सामान बिकता है अतः वाणी का बड़ा ही महत्व है ! आचार्य भर्तृहरि ने वाणी का महत्व बताते हुए कहा है कि सभी आभूषण क्षीण होते हैं लेकिन वाणी रूपी आभूषण सदा बना रहता है अत: वाणी ही मनुष्यों का सर्वोत्तम आभूषण है

क्षीयंते खलु भूषणानि सत्तमं वाग्भूषणम् ! 14

भर्तृहरि के इस ग्रंथ की व्यापकता, महत्ता एवं उपादेयता .का सहज अनुमान किया जा सकता है कि जिस प्रकार माता-. पिता . गुरुजन .आदि सदा ही हमें .व्यवहारिक ज्ञान प्रदान .करते हैं हमें अपने कल्याण .के मार्ग .की .ओर अग्रसर करते हैं वैसे ..ही .आचार्य भर्तृहरि ने भी .नीतिशतक के ....माध्यम से .बताया ..है कि .हमें .स्वाभिमानी बनना चाहिए ..और स्वाभिमानी .व्यक्ति को किसी भी .परिस्थिति में अपने स्वाभिमान का परित्याग .नहीं करना चाहिए ! 14

इस ..संसार में मनुष्या. को श्रेष्ठ व सदाचार युक्त कर्म चाहिए !

'शीलं परं भूषणम् '. 16 ! व्यक्ति को धीरता पूर्वक कार्य करते रहना चाहिए हमारी उन्नति व अवनति का मार्ग हमारे भाग्य पर निर्भर .होता है अतः हमें भाग्य के भरोसे ..न .रहकर सदा कर्म करते रहना ..चाहिए! .जीवन में समय एक सा नहीं रहता परिस्थितियां भी बदलती रहती है अतः .हमें विपरीत परिस्थितियां आने पर .घबराना नहीं चाहिए क्योंकि विपत्तियां सभी .पर आती है चाहे .वह चन्द्रमा और सूर्य ही हो!

शशि -. दिवाकरयोर्ग्रहपीड़नं
गजभुजङ्गमयोरपि बंधनम्!
मतिमतां च विलोक्य दरिद्रतां
विधिरहो ! बलवानिति में मति:!! 17

मनुष्य को सदैव आलस्य त्यागकर कर्म करने चाहिए क्योंकि आलस्य मनुष्य का परम शत्रु. है ". आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु:! 18

हमें सदा कर्म करते रहना चाहिए हमें अपने कार्य सामर्थ्य के अनुसार ..करने चाहिए किंतु .तीव्रता .पूर्वक नहीं करने चाहिए क्योंकि तीव्रता द्वारा .किया गया कार्य और उसके परिणाम .कांटे के समान मृत्यु पर्यंत ह्रदय को जलाने वाला होता है !

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यजातं
परिणतिरवधार्या ..यत्नत: पंडितेन !
अतिरभस कृतानां कर्मणामाविपत्ते:
भवति हर्दयदाही शल्यतुल्योविपाक:!! 19

इस . संसार .में कहा जाता है कि व्यक्ति सुंदर .शरीर .अपने पूर्व कर्मों के अनुसार प्राप्त करता है .और .कई लोग सुंदर शरीर. प्राप्त .न .करने पर अपने .आप को कुरुप समझते हैं, अपनी कुरूपता को दूर करने हेतु लेप आदि लगाते हैं तो कुछ .लोग .आभूषण .आदि से भी अपने शरीर की .शोभा .बढ़ाते हैं .किंतु भर्तृहरि ने. नीतिशतक में अपने .हाथ आदि की शोभा .परोपकार से मानते हैं

श्रोत श्रुतेनैव न कुण्डलेन
दानेन पाणिर्न .तू कड्कणेन !
विभाती काय: करुणा पराणामं
परोपकारैर्न तू ..चंदनेन !! 20

भर्तृहरि ने अपने नीतिशतक के माध्यम से यह भी बताना चाहा .कि मनुष्य को यह जीवन बार-. .बार प्राप्त नहीं होता यदि आपने मनुष्य जीवन को प्राप्त किया. . है . तो इस जीवन में साहितय, ..संगीत और कला की शिक्षा अवश्य .प्राप्त करें नहीं तो आप का जीवन पशु के .समान ही होगा!

साहित्य -. संगीत .कला .विहीन:
साक्षात्पशु:. पुच्छ .विषाण .हीन:
तृणं .न खादनन्ति जीवमान:
तद् भागधेयं परमं पशूनाम्!! 21

कवि भर्तृहरि ने .सभी को. सज्जन बनने की .शिक्षा प्रदान करते ..हैं!

विपदि धैर्यमथाभ्युदय क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम:. !
यशसि चाभिरुचि व्यर्सनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं. हि महात्मनाम् ! ! 22

भर्तृहरि ने नीतिशतक के द्वारा रिश्तो की महत्ता बताते .हुए कहते कि मनुष्य .अपने ...जीवन .में ना जाने कितने रिश्ते को निभाता है किंतु वास्तविक रूप .में जो पुण्य करते हैं वही इस संसार में सच्चे अर्थों में रिश्ते निभा सकते हैं

य: प्रीणयेत्सुचरिते प्रितरं स पुत्रों
यद्भतुरेव हितमिच्छति तत् कलत्रम्!
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं य
देतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते. !! 23

भर्तृहरि के श्लोकों की उपादेयता आज और बढ़ गई है क्योंकि नीतिशतक में हमें कटुवचन , भाग्य . नीति,. चिंता ,मूर्ख, सज्जन आदि विषयों पर श्लोक मिलते हैं जो हमें सुपथ की ओर अग्रसर करते हैं !

हम सभी के अनेक मित्र होते हैं किंतु सच्चा मित्र वही होता है .जो कि-
पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहतिप गुणानप्रकटीकरोति!
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्त: !! 24
कवि भर्तृहरि ने अपने नीतिशतक में राजनीति का .भी बड़ा ही अच्छा वर्णन. किया है और कहते हैं कि राजनीति वाराङ्गना के समान आचरण करने वाली होती है
सत्यानृता. च पुरुषा प्रियवादिनी च
हिंस्त्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या!
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा !! 25

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नीतिशतक में वर्णित विषयों व श्लोकों का ध्यान से. अध्ययन किया जाए तो यह श्लोक केवल एक काल के लिए ही नहीं रचे गये अपितु यह वर्तमान भूत और भविष्य तीनों काल के लिए लिखे गए हैं ! ये किसी लिंग विशेष अथवा व्यक्तिविशेष .के लिए नहीं हैं अपितु सभी व्यक्ति के लिए सभी पीढ़ियों के लिए हैं. ! इस ग्रंथ की शिक्षा कभी भी कहीं पर भी प्राप्त की जा सकती है ! कोई भी इसका अध्ययन कर सकता है ये श्लोक ना केवल हमारे अपितु सभी के .लिए रोचक व ज्ञानवर्धक है ! यह ग्रंथ हमारे कर्तव्य का मार्ग प्रशस्त करने के साथ- साथ सदाचरण करने व बुद्धिमत्ता पूर्ण कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं ! यह ग्रंथ हमें राजनीति व नीतिशास्त्र की शिक्षा भी प्रदान करता है अतः इसकी उपादेयता तो यह स्वयं सिद्ध करता है!

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची--

1. विश्वनाथ साहित्यदर्पण . व्याख्या. डॉ .सत्यव्रत सिंह, प्रकाशक चौखंबा विद्याभवन वाराणसी 221001 दशम संस्करण 1997 ,षष्ठ परिच्छेद पृष्ठ 555
.2. भर्तृहरि ,. नीतिशतक व्याख्या. डॉ. गंगाधर भट्ट, डॉ विनोद दीक्षित प्रकाशक अजमेरा बुक कंपनी जयपुर 302002 , पृष्ठ. 10
3. वही, पृष्ठ 11
4.वामन शिवराम आप्टे संस्कृत हिंदी को न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन प्रकाशन दिल्ली भारत .भ्रष्ट 500
5. वही , पृष्ठ 1000
6. भर्तृहरि नीतिशतक व्याख्या . डॉ. बाबूलाल शर्मा ,. डॉ यशवंत कुमार जोशी, अरावली प्रकाशन 457 अंबामाता योजना उदयपुर, प्रथम संस्करण 1999 , श्लोक 11

,पृष्ठ 19
7. भर्तृहरि , नीतिशतक व्याख्या. डॉ. गंगाधर भट्ट, डॉ विनोद दीक्षित प्रकाशक अजमेरा बुक कंपनी जयपुर 302002 , श्लोक 8, पृष्ठ 38
8. . विश्वनाथ साहित्यदर्पण व्याख्या. डॉ. सत्यव्रत सिंह, प्रकाशक चौखंबा विद्याभवन वाराणसी. 221001 ,. दशम संस्करण 1997, प्रथम परिच्छेद पृष्ठ
9 .भर्तृहरि ,नीतिशतक व्याख्या. डॉ. गंगाधर भट्ट, डॉ विनोद दीक्षित ,. प्रकाशक अजमेरा. बुक कंपनी जयपुर 302002 , श्लोक 48, पृष्ठ 74
10. वही, श्लोक 73, पृष्ठ 100
11. वही, श्लोक 25, पृष्ठ 53
12. वही, श्लोक 35 पृष्ठ 62
13. वही श्लोक 33 पृष्ठ 60
14. वही श्लोक 16 पृष्ठ 45
15. लांड्गूलचालनमधश्चरणावपातम्
भूमौ निपत्य वदनोदरदर्शन च!
श्वा पिंण्डदस्य कुरुते गजपुड्गवस्तु
धीरं विलोकयति चाटूशतैश्च भूड्क्ते !!
वही, श्लोक 24 पृष्ठ 53
16. .वही, श्लोक 81, पृष्ठ 108
17. भर्तृहरि नीतिशतक व्याख्या .डॉ . बाबूलाल शर्मा , डॉ. यशवंत कुमार जोशी, अरावली प्रकाशन 457 अंबामाता योजना उदयपुर, प्रथम संस्करण 1999 श्लोक 92 ,
पृष्ठ 144
18. वही, श्लोक 87, पृष्ठ 137
19. वही, श्लोक 100, पृष्ठ 157
20. भर्तृहरि नीतिशतक व्याख्या. डॉ. गंगाधर भट्ट, डॉ विनोद. दीक्षित ,. प्रकाशक अजमेरा बुक कंपनी जयपुर 302002 , श्लोक 63, पृष्ठ 90
21. भर्तृहरि नीतिशतक. व्याख्या डॉ. बाबूलाल शर्मा ,डॉ यशवंत कुमार जोशी, अरावली प्रकाशन 457 अंबामाता योजना उदयपुर. , प्रथम संस्करण 1999 , श्लोक 12
,पृष्ठ 21
22.वही, श्लोक 64, पृष्ठ 103
23. वही, श्लोक 69, पृष्ठ 111
24. वही, श्लोक 74 पृष्ठ 118
25. वही, श्लोक 39 पृष्ठ 66